HMMCW LIBRARY

WEST BENGAL STATE UNIVERSITY

B.A. Programme 5th Semester Examination, 2021-22

HINGDSE02T-HINDI (DSE1)

तुलसीदास

Time Allotted: 2 Hours | Full Marks: 50

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates should answer in their own words and adhere to the word limit as practicable.

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 1×5 = 5

(क) 'गीतावली' किस भाषा में रचित है ?

(ख) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा सोहर छन्द में रचित कौन-सी रचना है ?

(ग) तुलसीदास की कौन-सी रचना रहीमदास की रचना से प्रेरित होकर लिखी गई है ?

(घ) 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता पा लसी तुलसी की काव्यकला।'– यह कथन किसका है ?

(ङ) 'रामचरितमानस' के चौथे कांड का नाम क्या है ?

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 5×3 = 15

(क) सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिं जाई॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी॥
राम लखन सिय रूप निहारी। पाइ नयनफलु होहिं सुखारी॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भए मगन देखि दोउ बीरा॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छन एहीं॥
रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे॥
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन मन बर बानी॥

(ख) कपि सुग्रीव बंधु-भय-ब्याकुल आयो सरन पुकारी।
सहि न सके दारुन दुख जनके, हत्यो बालि, सहि गारी॥
रिपुको अनुज बिभीषन निशिचर, कौन भजन अधिकारी।
सरन गये आगे ह्वे लीन्हौं भेट्यो भुजा पसारी॥
असुभ होइ जिनके सुमिरे ते बानर रीछ बिकारी।
बेद-बिदित पावन किये ते सब, महिमा नाथ ! तुम्हारी॥
कहँ लगि कहौं दीन अगनित जिन्हकी तुम बिपति निवारी।
कलिमल-ग्रसित दासतुलसीपर, काहे कृपा बिसारी॥

(ग) या सिसुके गुन नाम-बड़ाई।
को कहि सकै, सुनहु नरपति, श्रीपति समान प्रभुताई॥
जद्यपि बुधि, बय, रुप, सील, गुन समै चारु चार्यो भाई।
तदपि लोक-लोचन-चकोर-ससि राम भगत-सुखदाई॥
सुर, नर, मुनि करि अभय, दनुज हति, हरहि, धरनि गरुआई।
कीरति बिमल बिस्व-अघमोचनि रहिहि सकल जग छाई॥

(घ) भुजनि पर जननी वारि-फेरि डारी।
क्यों तोर्यो कोमल कर-कमलनि सम्भु-सरासन भारी ?॥
क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताडका मारी ?
मुनि-प्रसाद मेरे राम-लषनकी बिधि बड़ि करवर टारी॥
चरनरेनु लै नयननि लावति, क्यों मुनिबधू उधारी।
कहौधौं तात! क्यों जीति सकल नृप बरी है बिदेहकुमारी॥

(ङ) अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥
पायेउँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहों।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं॥
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

3. विनयपत्रिका के आधार पर तुलसीदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए। 15

अथवा

तुलसीदास की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि की समीक्षा कीजिए।

4. रामकाव्य परम्परा में तुलसीदास का स्थान निर्धारित करते हुए उनकी काव्यगत विशेषता पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

तुलसीदास महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे। उनका सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है– इस कथन से आप कितना सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

N.B. : *Students have to complete submission of their Answer Scripts through E-mail / Whatsapp to their own respective colleges on the same day / date of examination within 1 hour after end of exam. University / College authorities will not be held responsible for wrong submission (at in proper address). Students are strongly advised not to submit multiple copies of the same answer script.*

——×——